खण्ड–8, अंक–1, वर्ष–2020 शोध पत्र
D.O.I.: 10.22445/avsp.v8i1.9

जनजातीय जीवन में वनोपजों की आर्थिक महत्ता–एक अध्ययन

अनसिंह चौहान एवं भारती कुमार

शासकीय मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय, भोपाल–462 001, म.प्र., भारत

प्राप्ति तिथि–29.09.2020, स्वीकृति तिथि–25.11.2020

सार– जनजातीय लोग अपने दैनिक जीवन में अनेक वनोपज का उपयोग करते हैं। इनके द्वारा वनोपजों का उचित संरक्षण भी किया जाता है। इस प्रकार से संरक्षित वनस्पतियाँ स्थानीय जन को आर्थिक रूप से सहायता भी प्रदान करती हैं। इन पादपों से प्राप्त फल, फूल और बीजों को स्वयं उपयोग करते और बाजार में बेचकर आर्थिक आय अर्जित करते हैं। इस प्रकार इनका जीवन सुचारू रूप से चलता रहता है। प्रस्तुत शोध कार्य में वनोपजों के आर्थिक पक्ष को विश्लेषित किया गया है।

बीज शब्द– वनोपज, पादप संरक्षण

Economic Importance of Forest Produce Amongst Tribal People Population

Ansingh Chouhan and Bharty Kumar

Govt. Motilal Vigyan Mahavidhalaya Bhopal-462 001, M.P., India

Abstract- Tribal population are using many forest products in their daily life. They also provide proper conservation to forest products. This conservation effort provides botanical help in their propagation. Local people economically utilize Fruits, Flowers and Seeds from plants themselves and also earn income from sale in the market. Present research work is an attempt to analyze the economic perspective of forest products.

Key words- Forest products, Plant conservation

1. परिचय

मनुष्य अपने जन्म से ही पादपों पर निर्भर रहा है। इसी प्रकार आदिमानव पूरी तरह वनों पर आश्रित था। वनों पर आश्रित जनजाति समुदाय के लोग सदैव ही प्रकृति संरक्षण के प्रति सजग रहते हुए जिम्मेदारी पूर्वक इसकी रक्षा करते हैं क्योंकि वे अपनी आवश्यकताओं सहित जीवन संचालन हेतु प्रमुखता से प्राकृतिक संपदाओं पर आश्रित रहते हैं। इनका अस्तित्व ग्रामीण संस्कृति एवं जैवविविधता के गहन संबंधों का परिणाम है। म.प्र. के वनों में अनेक वनोपज प्राकृतिक रूप से प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। अध्ययन किये गए क्षेत्रों में भी अनेक ऐसी वनोपज देखने को मिलती है। ये वनस्पतियाँ इन समुदाय द्वारा पीढ़ीयों से संरक्षित की गई हैं। वर्तमान में कई वनोपजों की मात्रा में कमी भी देखने को मिल रही है। कृषि भूमि के पर्याप्त उपजाऊ न होने की स्थिति में स्थानीय समुदाय की इन वनोपज पर निर्भरता निरंतर बनी हुई है। इस प्रकार यहाँ पर प्रकृति संरक्षण तथा सीमित दोहन जैसी व्यवस्था भी देखने को मिलती है। इस शोध के माध्यम से इन क्षेत्रों में पाई जाने वाली वनोपजों के आर्थिक महत्व को समझने का प्रयास किया है। कुछ वनोपज अपेक्षाकृत महंगी होने के बावजूद कम कीमत पर बेची जाती है। इस प्रकार पाया गया कि वनोपजों का संरक्षण, संवर्धन तथा दोहन इन्हीं स्थानीय समुदाय द्वारा प्रतिपादित किया जाता है।

अनेक शोधकर्ताओं ने विभिन्न स्थानों पर इस विषय में शोध कार्य किया है। राजेश्वर व अन्य[1] ने असम के पोहा संरक्षित वन में पाये जाने वाले जंगली खाद्य पादपों के संरक्षण संबधी कार्य पर अध्ययन किया। मालथी तथा काला[2] ने तमिलनाडु की जनजातियों के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण संबंधी परंपरागत ज्ञान का अध्ययन किया तथा इसमें पाया कि इन जनजातियों के परंपरागत ज्ञान न केवल

Corresponding Author: ansinghchouhan@gmail.com

सांस्कृतिक विरासत क्षेत्र की जैवविविधता को संरक्षित करने में सहायक है, अपितु यह ज्ञान समुदाय के कल्याण में भी सहायक है। साहू तथा अन्य[3] ने मध्य भारत में स्थित पवित्र पादपों तथा उनके जनजातीय महत्व का अध्ययन किया; उन्होने 265 पवित्र वनों का उल्लेख किया। द्विवेदी तथा अन्य[4] ने संकटग्रस्त औषधीय पादपों की स्थिति तथा उनके संरक्षण संबंधी प्रयासों का अध्ययन किया। चौहान व अन्य[5] ने जनजाति समुदायों के दैनिक जीवन में उपयोगी ताड़ी के महत्व का अध्ययन किया गया। चौहान व अन्य[6] ने पावन निकुंज में संरक्षित पेड़–पौधों और जीव–जन्तु का अध्ययन किया। जैन[7–9] ने भारतीय ईथनोबॉटनी संबंधी महत्वपूर्ण अध्ययन किये।

2. सामग्री एवं विधि

शोध हेतु धार जिले के विभिन्न स्थानीय बाजारों एवं गाँवों का सर्वे, जोकि जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है, का चयन किया गया जो जनजाति बाहुल्य क्षेत्र होने के साथ–साथ वन से परिपूर्ण क्षेत्र है तथा इसमें रहने वाले जनजाति समुदाय अपनी दैनिक आवश्यकताओं हेतु वनों पर आश्रित रहते हैं। अध्ययन क्षेत्र में निवास करने वाली विभिन्न जनजातियों में प्रकृति एवं प्राकृतिक संपदा के प्रति विशेष लगाव देखने को मिलता है। यह प्रवृत्ति उनके व्यवहार में परंपरागत रूप से व्याप्त है।

3. भौगोलिक विवरण

मध्य प्रदेश का भौगोलिक क्षेत्रफल 308.252 वर्ग कि.मी. है जो देश के क्षेत्रफल का 9.38 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश का वन क्षेत्र 94,689.38 वर्ग कि.मी. है जो भौगोलिक क्षेत्रफल का 30.72 प्रतिशत है तथा देश के क्षेत्रफल का 12 प्रतिशत है। प्रदेश में 65.36 प्रतिशत आरक्षित वन, 32.84 प्रतिशत संरक्षित वन तथा 1.80 प्रतिशत अवर्गीकृत वन क्षेत्र है। मध्यप्रदेश के वन का आवरण 76.013 वर्ग कि.मी. है जोकि भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.66 प्रतिशत है। प्रदेश में 1.38 प्रतिशत सघन वन, 11.95 प्रतिशत सामान्य वन तथा 11.33 प्रतिशत खुले वन एवं 0.70 प्रतिशत उजड़े वन पाये जाते हैं। आरक्षित वन 61886.46 वर्ग कि.मी. संरक्षित वन 31098.04 वर्ग कि.मी. तथा अवर्गीकृत वन 1704.85 वर्ग कि.मी. पाया जाता है। यह मध्यप्रदेश के पश्चिम भाग में स्थित है; उत्तर में मालवा, विन्ध्याचल रेंज मध्यक्षेत्र में तथा दक्षिण में नर्मदा घाटी भौगोलिक खण्डों में फैला हुआ है। धार जिले का भौगोलिक स्थिति अक्षांश 22^0 1′ 14′′ से 23^0 9 49′′ उत्तर देशान्तर 74^0 28′ 27′′ से 75^0 42′ 43′′ पूर्व। क्षेत्रफल 8,153 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ की जलवायु सुखद है। वर्षा ऋतु को छोड़कर सामान्यतः शुष्क रहता है।

चित्रः–1 भारत का मानचित्र

चित्रः–1 अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र (मध्यप्रदेश तथा धार)

तालिका–1

क्र.सं.	वनस्पतिक नाम व परिवार	स्थानीय नाम	उत्पाद	प्रतिदिन उत्पादन	मूल्य	वार्षिक उत्पादन
1.	*बोरेसॅस फ्लेबेलीफर* लिन एरेकेसी	ताड़	ताड़ी पेय	20 लीटर/ पेड लगभग 28 बॉटल	20 रूपये/ बॉटल	40 दिन लगभग 1120 बॉटल 22400 रूपये
2.	*फिनिक्स एक्यूलीस* बच–हम. इक्स. रोक्सबर्ग. एरेकेसी	सिन्दी	सिन्दी पेय	25 लीटर लगभग 33 बॉटल	20 रूपये/ बॉटल	35 दिन लगभग 1155 बॉटल 23100 रूपये
			सिन्दी फल	5 किलोग्राम	10 रूपये/ किलोग्राम	12 दिन लगभग 60 किलोग्राम 600 रूपये
			सिन्दी झाडू	–	15 रूपये/नग	6 नग लगभग/पेड़ 90 रूपये
			सिन्दी टोकरी	–	60 रूपये/नग	5 नग लगभग 300 रूपये
3.	*मधुका इण्डिका* जे. एफ. मेलिन सेपोटेसी	महुआ	फूल	30 किलोग्राम	40 रूपये/ किलोग्राम	150 किलोग्राम लगभग 6000 रूपये
			बीज	5 किलोग्राम	16 रूपये/ किलोग्राम	90 किलोग्राम लगभग 1440 रूपये
4.	*एन्नोना स्कवेमोसा* लिन एन्नोनेसी	सीताफल	फल	15 किलोग्राम	40 रूपये/ किलोग्राम	20 दिन 300 किलोग्राम 12000 रूपये
5.	*एन्नोना रेटीकुलेटा* लिन एन्नोनेसी	रामफल	–	30 किलोग्राम	50 रूपये/ किलोग्राम	80 किलोग्राम लगभग 4000 रूपये

6.	*डायोस्पाइरोस मेलेनोजाइलॉन* रॉक्स. इबेनेसी	टेमरू	फल	50 किलोग्राम	40 रूपये/ किलोग्राम	100 किलोग्राम लगभग 4000 रूपये
7.	*जिजीपस मॉरिशियाना* लेमार्क रेहम्नेसी	बेर	फल	50 किलोग्राम	5 रूपये/ किलोग्राम	300 किलोग्राम लगभग 1500 रूपये
8.	*एजाडिरेक्टा इण्डिका* ए.जुस. मेलिएसी	नीम	फल	40 किलोग्राम	10 रूपये/ किलोग्राम	400 किलोग्राम लगभग 4000 रूपये
9.	*साइजियम कुमीनी* (एल.) स्कील्स. मिर्टेसी	जामुन	फल	35 किलोग्राम	30 रूपये/ किलोग्राम	200 किलोग्राम लगभग 6000 रूपये
10.	*मोमोरडिका डाइओइका* रॉक्सबर्ग कुकरबिटेसी	कंटला	फल	–	60 रूपये/ किलोग्राम	–
11.	*केसिया टोरा* लिन. सिसलपिनिएसी	पूवाड़िया	फल	30 किलोग्राम	10 रूपये/ किलोग्राम	150 किलोग्राम लगभग 1500 रूपये
12.	*अकेशिया निलोटिका* (एल.) वाइल्ड इक्स. डेलीले माइमोसेसी	बबूल	फली	50 किलोग्राम	8 रूपये/ किलोग्राम	300 किलोग्राम लगभग 2400 रूपये
13.	*मोरिंगा ऑलिफेरा* लामार्क मोरिंगेसी	सेंगु	फली	60 किलोग्राम	40 रूपये/ किलोग्राम	–
14.	*मेंजिफेरा इण्डिका* लिन. एनाकार्डिएसी	आम	फल	–	40 रूपये/ किलोग्राम	–
15.	*मेनिल्कारा हेक्सेन्ड्रा* (रॉक्स.) डुबार्ड सेपोटेसी	रइना (खिरनी)	फल	40 किलोग्राम	30 रूपये/ किलोग्राम	–
16.	*सेलास्ट्रस पेनिकुलेटस* वाइल्ड सेलास्ट्रेसी	मालकांगनी	फल	–	–	–
17.	*टेमेरिन्डस इण्डिका* लिन. सिसलपियेनेसी	आमली	फल	60 किलोग्राम	–	–
18.	*पिथेसेलोबियम डल्से* (रॉक्स.) बेन्थम माइमोसेसी	जंगल जलेबी	फल	30 किलोग्राम	–	–
19.	*एडनसोनिआ डिजीटाटा* लिन बॉम्बेकेसी	गोरख इमली	फल	–	–	–
20.	*बुकनानिया लॉन्जन* स्प्रेंग एनाकार्डिएसी	चरोली	फल	–	–	–
21.	*जेट्रोफा कर्कस* लिन. यूफोरबिएसी	अगरवेण्डिया	फल	–	–	–

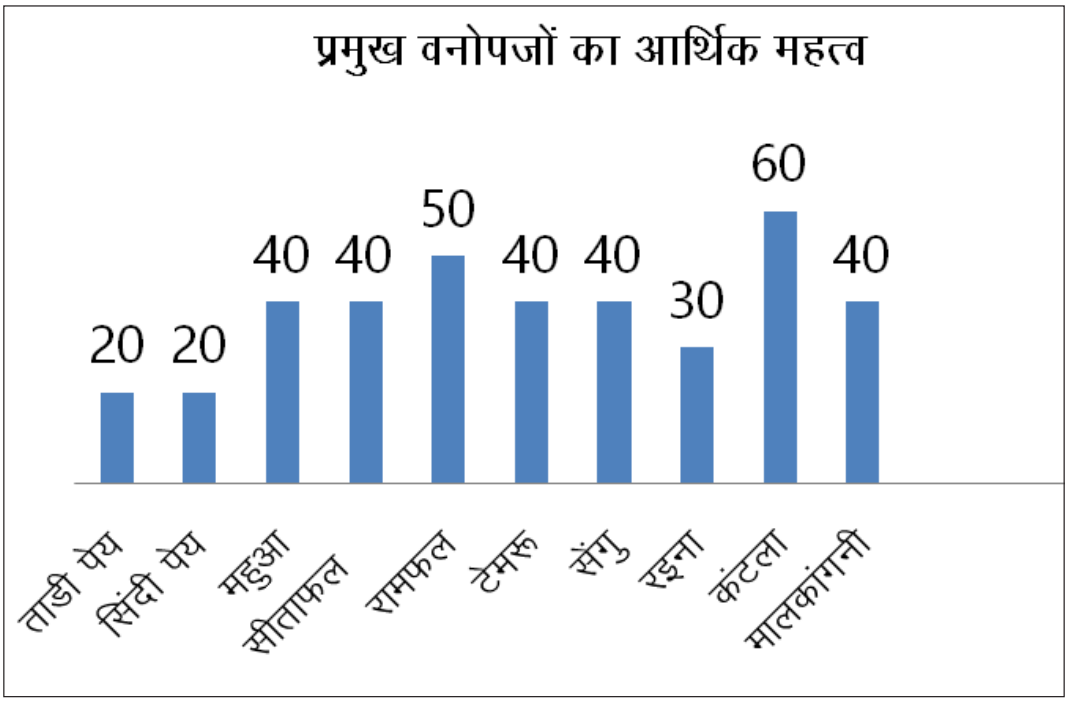

ग्राफ–1: "वनोपजों का मूल्य" ताड़ी और सिंदी पेय लीटर में तथा अन्य सभी महुआ, सीताफल, रामफल, टेमरू, सेंगु, रइना, जामुन मालकांगनी आदि प्रति किलोग्राम में।

ताड़ का पेड़

ताड़ी पेय

सिंदी का पेड़

सिंदी का फल

सीताफल

चित्र–2: वनोपज (पेड़ और फल सहित)

आम का फल

गोरख इमली का फल

चरोली फल

जामुन का फल

महुआ के फूल

चित्र–2: वनोपज (पेड़ और फल सहित)

4. निष्कर्ष

वनोपजों के आर्थिक महत्व को लेकर किये गये इस अध्ययन से पता चलता है कि अनेक वनस्पतियाँ प्रतिवर्ष नियत समय पर स्वतः ही वनों में उगती है। जिन्हें स्थानीय समुदाय द्वारा बाजार में बेचकर आर्थिक लाभ प्राप्त किया जाता है। कुछ पादपों को अपने खेतों/घरों के आसपास रोपित कर धनार्जन किया जाता हैं। ताड़ी तथा महुआ लगभग एक माह तक पर्याप्त मात्रा में उत्पादित होते हैं। जिनसे इन दिनों में आर्थिक लाभ मिलता है। ताड़ी को विशेषकर पथरी रोग के उपचार में प्रयोग में लाया जाता है। इसके अतिरिक्त ये ऊर्जा का उत्तम स्त्रोत भी है। इसमें शर्करा की पर्याप्त मात्रा होती है।

ताड़ी (20 रूपये/लीटर), सिन्दी पेय (20 रूपये/लीटर) में बेचा जाता है। ताड़ी जनवरी से अप्रैल तक आती है। महुआ (40 रूपये/किलोग्राम), सीताफल (40रूपये/किलोग्राम), रामफल (50रूपये/किलोग्राम), टेमरू (40 रूपये/किलोग्राम), बेर (10रूपये/किलोग्राम), नीम (10रूपये/किलोग्राम), जामुन (30रूपये/किलोग्राम), पूवाड़िया (10 रूपये/किलोग्राम), बबूल (8 रूपये/किलोग्राम), सेंगु (40 रूपये/ किलोग्राम), खिरनी (30 रूपये/किलोग्राम) आदि। इस प्रकार वर्ष भर विभिन्न वनोपजों से आर्थिक लाभार्जन होता है।

संदर्भ

1. राजेश्वर, पी0; जितू, जी0; अजित के0 टी0 एवं तेरोन, आर0 (2013) ईथनोबॉटनीकल स्टडी ऑफ वाइल्ड इडीबल प्लान्टस इन पोह रिजर्वस फोरेस्ट, असम, इण्डिया मल्टीपल फंक्शन्स एण्ड इम्पलीकेशंस फॉर कांजरवेशन। रिसर्च जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड फोरेस्ट्री सांइस, खण्ड–1, अंक–3, मु0पृ0 1–10।
2. मालथी एवं काला (2012) ट्रेडिशनल प्रेक्टिसेस ऑफ ट्राइब्स फॉर द कन्जरवेशन ऑफ नेचरल रिर्सोसेस, इन्टर0 जर्नल करंट साइंस, खण्ड–2, मु0पृ0 308–312।
3. साहू, पी0 के0 ए0; कुमारी, श्वेता साव; सिंह, एम0 एवं पांडे, पी0 (2013) सेकर्ड प्लांट्स एण्ड देयर इथनोबॉटनीकल इम्पोर्टेन्स इन सेन्ट्रल इण्डियाः ए मिनी रिव्यू।

4. द्विवेदी, एस0; काउल, एस0; पाण्डे, डी0; श्रीवास्तव, एस0 एवं द्विवेदी, एस0 एन0 (2007) स्टेट्स एण्ड कन्जरवेशन स्ट्रेटेजीइस ऑफ इन्डेन्जर्ड एण्ड वुल्नेराबल मेडिशिनल, प्लाण्ट्स प्लांट इण्डिका, खण्ड–3, अंक–2, मु0पृ0 13–15।
5. चौहान, ए0; त्रिपाठी, जे0 एवं डावर, एन0 (2018) भुवाड़ा बाबा (धार, म.प्र.) पावन निकुंज में संरक्षित जैवविविधता का अध्ययन, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड–6, अंक–1, मु0पृ0 1–11। DOI:10.22445/avsp.v6i1.13888
6. चौहान, ए0; त्रिपाठी, जे0 एवं डावर, एन0 (2017) धार म0प्र0 जिले की जनजातियों के जीवन शैली में बहुउपयोगी ताड़ *(बोरेसस फ्लेबेलीफर* लिन्) की महत्ता का अध्ययन, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड–5, अंक–1, मु0प्र0 61–66।
   DOI:10.22445/avsp.v5i01.9849
7. जैन, एस0 के0 (1981) गलिमप्सेस ऑफ इंडियन ईथनोबॉटनी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, मु0पृ0 272–294।
8. जैन, एस0 के0 (1991) डिक्शनरी ऑफ इंडियन फोक मेडिसिन एण्ड ईथनोबॉटनी, डीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
9. जैन, एस0 के0 (2002) ए मेन्यूअल ऑफ ईथनोबॉटनी, साइंटिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर, मु0पृ0 1–193।